गांधी और हिंदी सृजन-संदर्भ
तीन दिवसीय संगोष्ठी राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर
एवं विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान
12 -14 जनवरी 2020

धर्म संघ शिक्षा मंडल, दुर्गाकुंड, वाराणसी के सभागार में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ; केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में 'गांधी और हिंदी सृजन-संदर्भ' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर का उद्घाटन साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष **प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति **प्रो. अच्युतानंद मिश्र**, अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र**, विद्याश्री न्यास के संस्थापक **प्रो. महेश्वर मिश्र, डॉ. अरुणेश नीरन** एवं **डॉ. दयानिधि मिश्र** के सामूहिक दीप-प्रज्ज्वलन, सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण, **डॉ. लेखमणि** के वैदिक स्तवन, **डॉ. उमापति दीक्षित** के पौराणिक मंगलाचरण एवं आचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा** के स्वस्ति-वाचन के साथ हुआ. मंचस्थ अतिथियों ने संभावना कला मंच द्वारा संयोजित विद्याश्री न्यास की चित्रवीथि एवं पोस्टर-प्रदर्शनी के उद्घाटन एवं **'गांधी और हिंदी सृजन-सन्दर्भ'** पुस्तक का लोकार्पण किया. इस क्रम में पूर्वोत्तर भारत से आई **वैशाली बरुवा** ने **'बीहू'** नृत्य प्रस्तुत किया.

डॉ. अरुणेश नीरन ने विषय की प्रस्तावना रखते हुए महात्मा गांधी की वैचारिक सृजनात्मकता से जुड़े विभिन्न आयामों की चर्चा की. उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में गांधी केंद्रीय व्यक्तित्व के रूप में प्रभाव छोड़ते हैं. वे हिंदी एवं भाषा से जुड़े विचारों के प्रति संवेदनशील हैं और नैतिक भी, जो हमारे शैक्षणिक परिवेश के लिए आवश्यक हैं. **प्रो. महेश्वर मिश्र** ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि गांधी और

उनके युग को समझना आज के दौर में बहुत कठिन है और आवश्यक भी. बिना उनके विचारों को समझे हम आज की भाषा एवं सृजन-संबंधी समस्याओं का समाधान कर पाएंगे, इसमें संदेह है. मुख्य अतिथि **प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी** ने बताया कि गांधी जी अपनी पत्रिकाओं और आलेखों के माध्यम से जो कह रहे थे, उसे हिंदी के लेखक अपनी रचनाओं में प्रतिष्ठित करते हुए उनका समर्थन दे रहे थे. गांधी केवल राजनीतिक स्वाधीनता की लड़ाई ही नहीं लड़ रहे थे बल्कि सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान की भी लड़ाई लड़ रहे थे. वे मनुष्य की मुक्ति का रास्ता बना रहे थे. अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में **प्रो. अच्युतानंद मिश्र** ने गांधी को मुक्तिदूत बताया और उनके विचारों को समाज, संस्कृति एवं भाषा का पथ-प्रदर्शक. उन्होंने गांधी जी के बहुमुखी चिंतन की सृजनात्मकता को सामाजिक रूप से अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि आधुनिकता कैसी होनी चाहिए, यह हमें गांधी के जीवन से सीखना चाहिए. इस सत्र का संयोजन **डॉ. राम सुधार सिंह** ने और धन्यवाद-ज्ञापन **डॉ. बिजेंद्र पाण्डेय** ने किया.

द्वितीय अकादमिक सत्र **'भाषा का प्रश्न, हिंदी पत्रकारिता और गांधी'** के अंतर्गत **डॉ. शुभनीत कौशिक** ने गांधी के भाषा-चिंतन के आधार पर बताया कि वे भाषा के आधार पर ही स्वराज्य की संकल्पना करते हैं क्योंकि भाषा में ही हमारी संस्कृति, हमारे मूल्य समाहित होते हैं. उन्होंने स्पष्ट किया गांधी की दृष्टि में भारतीय भाषाओं के बगैर स्वराज की बात करना बेमानी है. **प्राचार्य विश्वास पाटिल** ने कहा कि गांधीजी समाचार पत्रों को जनता के हित के भाव से निकालते के पक्षपाती थे. स्वाधीनता संग्राम की पत्रकारिता के मूल में यही विचारधारा थी, लेकिन अब की पत्रकारिता इन मूल्यों को पीछे छोड़ चुकी है. इसीलिए जनता का पत्रकारिता से मोहभंग हो रहा है. आज अनेक देश गांधी के विचारों को समझ रहे हैं और उनसे सीख भी रहे हैं. **प्रो. सुमन जैन** ने बताया कि गांधी का जो व्यक्तित्व हम देखते हैं वह दक्षिण अफ्रीका की देन है. वे पारंपरिक सौंदर्य-सिद्धांत को बदलकर

मानव-हित के सिद्धांत पर जोर देते हैं. **डॉ. उर्मिला पोरवाल** ने हिंदी पत्रकारिता में गांधी की उपस्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गांधी को अलग करके स्वतंत्रता आंदोलन की पत्रकारिता को नहीं समझा जा सकता. गांधीजी मानवीय समाज के सबसे सजग प्रहरी थे**. प्रो. दिलीप सिंह** ने बताया कि गांधी की भाषा-दृष्टि दो तरह से व्यापक थी. एक तो कि भारतीय भाषाओं को उनका उचित देय दिलाने के दृढ़ प्रतिज्ञ थे और दूसरे कि भाषा के माध्यम से वे भावनात्मक, सांस्कृतिक और भाषायी एकता का प्रयास इस तरह से कर रहे थे कि वह स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बन सके. उनका भाषा-आंदोलन भारत की स्वतंत्रता को संभव बनाने का मार्ग प्रशस्त कर रहा था. **प्रो. चितरंजन मिश्र** ने गांधी की भाषा-दृष्टि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उन्हें सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं सामाजिक एकता का सूचक बताया. साथ ही उन्होंने गांधी के विचारों के प्रति हमारी जानकारी के अभाव पर चिंता व्यक्त की. उनका कहना है कि बिना गांधी के विचारों को समझे हम भारत के स्वतंत्रता संग्राम को नहीं समझ सकते और न ही वर्तमान को दिशा दे सकते हैं. उनकी चिंता का केंद्र साधारण आदमी रहा है और उसकी भाषा भी. इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे **प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय** ने विचारों का समाहार करते हुए अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में गांधी जी को युगपुरुष बताया. साथ ही कहा कि उनका आंदोलनधर्मी व्यक्तित्व जितना संवेदनशील है उतना ही बहुआयामी भी. हमारे लिए वह महत्त्वपूर्ण भी हैं और आवश्यक भी. गांधी के सत्य, अहिंसा संबंधी विचारों को समझे बगैर समाज का वैचारिक विकास मुश्किल है. इस सत्र का संयोजन एवं संचालन **डॉ. जितेंद्र नाथ मिश्र** ने किया.

तृतीय अकादमिक सत्र **'हिंदी कविता और गांधी'** के अंतर्गत **डॉ. भावना शुक्ल** ने अपने आलेख 'हिंदी कविता और गांधी' के माध्यम से गांधी की महत्ता एवं उनके युगीन सामाजिक सरोकारों की चर्चा की. **प्रो. अलका पाण्डेय** ने द्विवेदी युग एवं छायावादी युग की कविताओं पर गांधी के बहुआयामी प्रभाव का विवेचन किया. **डॉ.**

क्रांतिबोध ने हिंदी कविताओं में गांधी की चिंतन-दृष्टि एवं उनके मूल्यों की प्रतिष्ठा के माध्यम से गांधी की सांस्कृतिक सूझबूझ का व्याख्यान किया. **डॉ. गोविन्द वर्मा** ने लोक-वार्ता में चंपारण आन्दोलन की उपस्थिति के माध्यम से सिद्ध किया कि यही वह विंदु है जो गांधी को प्रसिद्ध बनाता है और सफल भी. जनता यहीं से उनपर विश्वास करना शुरू करती है. **प्रो. सुधीर प्रताप सिंह** ने कविता में गांधी की जो संवेदनात्मक एवं भावात्मक उपस्थिति है उसके व्याज से उनके मूल्यपरक सिद्धांतों की चर्चा की और बताया कि गांधी की प्रसिद्धि जनता से उनके लगाव का सूचक है. **डॉ. विद्याविंदु सिंह** ने अवधी लोकगीतों के माध्यम से गांधी के प्रति लोक-दृष्टि एवं लोक के प्रति गांधी जी की दृष्टि को स्पष्ट किया. **प्रो. गजेंद्र कुमार पाठक** ने बताया कि गांधी का हिंदी-प्रचार स्वाधीनता आंदोलन की चेतना का प्रचार था. हिंदी के जरिए वे सामान्य जन को जोड़ रहे थे. रामराज की उनकी परिकल्पना और चरखा आंदोलन में क्रमशः तुलसी और कबीर की प्रेरणा थी. **प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय** ने कविता पर गांधी के प्रभाव के बरक्स गांधी पर कविता के प्रभाव की चर्चा करते हुए बताया कि गांधी पर सबसे ज्यादा प्रभाव रामचरितमानस का पड़ा था. उनके जीवन-सूत्र इसी ग्रन्थ से निकले हैं. अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. अनंत मिश्र** ने बताया कि गांधी के चरित और चिंतन का एक रूप हम कविताओं में देख सकते हैं, दूसरा दर्शन में, तीसरा समाज में, चौथा राजनीति में और पांचवा आध्यात्मिक चिंतन में देख सकते हैं. इस तरह गांधी की महत्ता के विविध पक्ष हैं. हिंदी कविता में उनकी उपस्थिति उनकी लोकप्रियता की सूचक है जो उनके प्रति कवियों की भाव-प्रवणता और भावात्मक लगाव के रूप को दर्शाती है. इस सत्र का संचालन **डॉ. ब्रजेंद्र त्रिपाठी** ने किया.

पहले दिन के कार्यक्रम का समापन काव्य-पाठ से हुआ. अध्यक्ष-मंडल में सर्वश्री **गिरिधर करुण, हरिराम द्विवेदी, सुरेंद्र वाजपेयी** जैसे वरिष्ठ कवियों की उपस्थिति के साथ प्रसिध्द गीतकार **डॉ. अशोक कुमार**

सिंह के संयोजन में सर्वश्री **ब्रजेशचन्द्र पाण्डेय, रचना शर्मा, सूर्यप्रकाश मिश्र, संगीता श्रीवास्तव, सुनील कुमार मानस, मंजरी पाण्डेय, नरेन्द्र मिश्र, अशोक घायल, नरोत्तम शिल्पी, शिव कुमार पराग, पवन कुमार शास्त्री, दीपंकर भट्टाचार्य, करुणा पाण्डेय, गौतम अरोड़ा, नसीमा निशा, अशोक अज्ञान, विद्याविंदु सिंह, सविता सौरभ, सिद्धनाथ शर्मा, भावना शुक्ल** आदि कवियों के काव्य-पाठ से यह कवि-गोष्ठी संपन्न हुई.

दूसरे दिन (13 जनवरी 2020) के पहले और संगोष्ठी के पांचवें आकादमिक सत्र को **'पं. विद्यानिवास मिश्र व्याख्यान'** के रूप में संयोजित किया गया, जिसका शुभारंभ **पं. कमलेश दत्त त्रिपाठी, प्रो. सुधीर चंद्र, डॉ. हितेंद्र कुमार पटेल** के सामूहिक दीप-प्रज्ज्वलन, **डॉ. लेखमणि** के मंगलाचरण एवं **श्री पीयूष कुमार द्विवेदी** के स्वस्तिवाचन से हुआ. इसी क्रम में मंचस्थ अतिथियों द्वारा पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत प्रस्तुत अब तक के व्याख्यानों पर आधृत एवं **डॉ. दयानिधि मिश्र** द्वारा संपादित पुस्तक **'संस्कृति की सत्ता'** और **डॉ. सुनील कुमार मानस** के संपादन में निकलने वाली पत्रिका **'आलोचन दृष्टि'** के भारत और भारतीयता तथा भारतीय चिंतन के विविध आयाम पर केन्द्रित दो विशेषांको का लोकार्पण हुआ. इसके साथ ही मंचस्थ अतिथियों और सचिव, विद्याश्री न्यास ने **डॉ. राजकुमार सिंह** को इस वर्ष के **'राधिका देवी लोककला सम्मान'** से सम्मानित किया. अपने स्वीकृति वक्तव्य में **डॉ. राजकुमार सिंह** ने इस सम्मान को कलामात्र के सम्मान के रूप में ग्रहण करते हुए इसे अपने साथी कलाकारों को समर्पित किया.

मुख्य वक्ता **प्रो. सुधीर चंद्र** ने महात्मा गांधी, महामना और पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन दर्शन के माध्यम से हिंदुत्व की उदारता और व्यापकता के विभिन्न आयामों की चर्चा की. गांधी जी के अंतिम दिनों के अकेलेपन और उनकी निराशा का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि किस तरह हमारे देश में महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति और व्यक्तित्व को निरंतर असंभव बनाया गया है. उन्होंने कहा

कि इस देश का कल्याण तभी संभव है जब हम गांधीजी के जीवन के उन दुखद और त्रासद पक्षों के अर्थ को भी समझे, जिसके लिए सिर्फ हम जिम्मेदार हैं. उन्होंने ने उस विश्व-विडंबना की तरफ भी संकेत किया जिसके तहत संसार को कभी गांधी की इतनी जरूरत नहीं थी जितनी आज है और यह संसार गांधी के लिए उतना गैर कभी नहीं था जितना आज है. विशिष्ट वक्ता **डॉ. हितेंद्र कुमार पटेल** ने गांधी जी के प्रति श्रध्दा भाव के साथ ही एक आलोचनात्मक दृष्टि को भी आवश्यक बताया. उन्होंने रेखांकित किया कि स्वतन्त्रता संग्राम से जिस व्यक्ति ने देश के जन-जन को जोड़ दिया, वह आजादी मिलने के साथ ही क्योंकर सबकी उपेक्षा का शिकार हुआ, इसकी एतिहासिक समझ इस देश के वर्तमान की एक जरूरी जरूरत है. अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में **प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी** ने दोनों वक्ताओं के विचारों को महत्वपूर्ण बताते हुए गांधी-चिंतन के विभिन्न सोपान पर प्रकाश डाला. उन्होंने गांधी-चिंतन को एक समग्र और सार्वभौमिक चिंतन के रूप में विश्लेषित किया. इस सत्र का संयोजन **डॉ. नरेन्द्र नाथ** राय ने किया.

छठे अकादमिक सत्र **'हिंदी कथा साहित्य और गांधी'** के अंतर्गत **डॉ. करुणा पांडेय** ने प्रेमचंद के प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, कायाकल्प एवं निर्मला; जैनेंद्र कुमार के सुखदा, सुनीता एवं वितर्क; रेणु के मैला आंचल तथा यशपाल के झूठा सच में चित्रित गांधी-दर्शन की समीक्षा प्रस्तुत की. इसी कड़ी में **डॉ. परितोष मणि** ने बताया कि भारतीय समाज के लिए गांधी जी की प्रतिबद्धताओं को हिंदी कथा-साहित्य ने निरंतर विस्तार दिया. **डॉ. सुनील कुमार मानस** ने गिरिराज किशोर के उपन्यास 'बा' के आधार पर गांधी के महात्मा के रूप में निर्माण के पीछे कस्तूरबा के त्याग एवं सहयोग का उल्लेख किया. **प्रो. भारती गोरे** ने गांधी को बुद्ध के बाद का सबसे बड़ा नेता बताया, जिसने भारतीय चिंतनधारा को सर्वाधिक प्रभावित किया है. उनका यह भी कहना था कि गांधी का जितना सकारात्मक चित्रण हुआ है उतना ही नकारात्मक चित्रण भी. **प्रो. बलिराज पाण्डेय** एवं **डॉ. बलभद्र**

ने हिंदी कहानी पर महात्मा गांधी के अद्यावधिक प्रभावों का विशद विवेचन प्रस्तुत किया. अध्यक्षीय उद्बोधन में **डॉ. उषा किरण खान** ने सत्र के विचारों का समाहार करते हुए बताया कि गांधी राम की तरह भारतीय समाज में सब जगह उपस्थित हैं और साहित्य, प्रत्यक्षतः गांधी जी से असंबद्ध होते हुए भी, अपने निहितार्थों में उनसे संबंद्ध न हो, यह संभव ही नहीं है. इस सत्र का संयोजन एवं संचालन **प्रो. वशिष्ठ अनूप** ने किया.

सातवें अकादमिक सत्र **'हिंदी का कथेतर गद्य और गांधी'** एवं आठवें अकादमिक सत्र **'खुली चर्चा'** को **प्रो. अखिलेश कुमार दुबे** ने एक साथ संयोजित एवं संचालित किया. **डॉ. श्रीराम परिहार** ने बताया कि ललित निबन्धों में गांधी का व्यक्तित्व और दर्शन दोनों प्रसारित हुए हैं. ज्ञान, कर्म, भक्ति आदि विविध स्तरों पर गांधी का स्पष्ट प्रभाव निबन्धों में द्रष्टव्य है. **डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी** ने गांधी पर लिखे गए महत्वपूर्ण नाटक- भारत : एक खोज, हत्या एक आकार की, बापू (नंदकिशोर आचार्य) आदि के विवेचन के साथ ही हिंदी नाटकों में बहुत देर तक और बहुत दूर तक गांधी की अनुपस्थिति को लेकर कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाए. **डॉ. विजय शर्मा** ने गांधी से सीधे जुड़ी और गांधी के प्रभाव को व्यक्त करने वाली अनेक फिल्मों की चर्चा करते हुए कहा कि गांधी पर केंद्रित फिल्में हमारी चिंतन-दृष्टि का विस्तार करती हैं. **डॉ. मंजुला दास** ने जयशंकर प्रसाद के नाटकों को आधार बनाते हुए गांधी के सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव तथा उनकी जीवन-दृष्टि को रेखांकित किया. **डॉ. प्रेमशीला शुक्ल** ने रेणु के मैला आंचल पर गांधी के प्रभाव और **डॉ. सोनी पाण्डेय** ने लोक साहित्य में गांधी की व्याप्ति के संदर्भ में अपनी बात रखी.श्रीयुत **श्रीप्रकाश मिश्र** ने बताया कि गांधी को दो तरह का साहित्य प्रिय था, पहला आध्यात्मिक चिंतन वाला और दूसरा सामाजिक परिवर्तन करने वाला. वे साहित्य को ही सामाजिक और आध्यात्मिक जागरण का बीजमंत्र मानते थे. **डॉ. विद्याशंकर शुक्ल** एवं **डॉ. उदयन मिश्र** ने गांधी की शिक्षा-नीति में स्वभाषा के महत्व को

रेखांकित किया. **प्रो. एस. शेषरत्नम** ने बताया कि भारतीय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन पर गांधी का गहरा प्रभाव पड़ा था. उन्होंने संस्कृति को जीवन में कैसे उतारना चाहिए, इसकी दृष्टि पैदा की. यही कारण है कि साहित्य एवं संस्कृति में उन्हें वह स्थान मिला जो अन्य किसी राजनीतिज्ञ को नहीं. इस संयुक्त सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में **प्रो. श्याम सुंदर दुबे** ने विचारों का समाहार करते हुए बताया कि गांधी ने हिंदी को बृहत्तर समाज एवं देशकाल से जोड़ने का जो अभियान छेड़ा था वह उनकी एक सुदीर्घ योजना थी, जो अब भी प्रभावित करती है. उन्होंने हिंदी के गद्य को एक संप्रेषणीय स्वरूप देने की कोशिश की है. उनके जीवन मूल्यों का संदेश गद्य साहित्य अपनी रचनात्मकता में बखूबी प्रस्तुत करता रहा है.

अयोजन के तीसरे दिन (14 जनवरी 2020) सम्मान एवं समापन समारोह, स्मृति-संवाद एवं युवा-समवाय के रूप में संगोष्ठी का नवा सत्र संयोजित किया गया. इस सत्र की अध्यक्षता म. गां. अं. हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति **प्रो. रजनीश शुक्ल** ने की. मुख्य अतिथि के रूप में **डॉ. नीलकंठ तिवारी**, राज्यमंत्री, स्वतंत्र प्रभार (पर्यटन एवं संस्कृति विभाग) उत्तर प्रदेश सरकार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में **डॉ. उदयप्रताप सिंह**, अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी एकेडेमी की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही.

इस सत्र में **डॉ. दयानिधि मिश्र** के संपादन में विद्याश्री न्यास के सांवत्सर उपक्रम राष्ट्रीय/अंतरराष्टीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर में प्रस्तुत आलेखों, व्याख्यानों पर आधृत पुस्तकों **'हिंदी का कथेत्तर गद्य : परंपरा और प्रयोग'**, **'हिंदी भाषा की परंपरा : प्रयोग और संभावनाएं'** तथा प. विद्यानिवास मिश्र के चयनित आलेखों के संग्रह **'जन-जन के राम'** के अतिरिक्त **प्रो. दिलीप सिंह** द्वारा संपादित और इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी पर आधृत पुस्तक **'परम्परा और आधुनिकता के प्रतीक : पं.**

विद्यानिवास मिश्र एवं **डॉ. राम सुधार सिंह** द्वारा संपादित पुस्तक **'फादर कामिल बुल्के : हिंदी और भारतीयता'** पुस्तक के साथ ही **'नागरी संगम'** एवं **'सोच विचार'** पत्रिका के अद्यतन अंकों का लोकार्पण भी मंचस्थ अतिथियों द्वारा संपन्न हुआ. स्वागत **प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी** ने किया.

कार्यक्रम के प्रारम्भ में पूर्वोत्तर भारत से आए प्रतिभागियों **मनीषा सैकिया, सर्मिष्ठा बोरा, वैशाली बरुआ, मीनाक्षी महंत** ने तिवा नृत्य, **निर्माणि अयेषा, उदेशिका कुमुद मालि, धनुष्का कुमारि, बूमिका विजेसुंदर** ने सिंहली नृत्य और **मनीषा सैकिया** ने सत्रिया नृत्य प्रस्तुत किया.

सत्र के मुख्य कार्यक्रम सम्मान-समारोह के अंतर्गत विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान से **डॉ. योगेन्द्र शर्मा 'अरुण'** को, विद्यानिवास मिश्र लोक कवि सम्मान से **श्री जगदीश पंथी** को, श्री कृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान से **श्री अशोक कुमार सिंह** को, एवं विद्यानिवास स्मृति सम्मान से **प्रो. अर्जुन तिवारी** को समारोहपूर्वक सम्मानित किया गया. इस क्रम में स्वस्तिवाचन श्री लेखमणि ने तथा शंखध्वनि **श्रीयुत श्रीकृष्ण शर्मा** ने की.

स्मृति संवाद के अंतर्गत **प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी** ने विद्या के विभिन्न क्षेत्रों में पंडित जी की अबाधगति की और **प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी** ने अज्ञेय के सर्वाधिक निकट होने के बावजूद एक कवि के रूप में विद्यानिवास मिश्र जी के उनसे अप्रभावित रहते हुए अपनी एक अलग राह बनाने के वैशिष्ट्य का उल्लेख किया. **प्रो. विजय कुमार भारद्वाज** एवं **प्रो. भरतसिंह** ने भी इस स्मृति-संवाद में प्रतिभागिता की.

युवा समवाय के अंतर्गत **श्रीमती जया** (महाराष्ट्र), **श्री दिनेश साहू** (सिक्किम) और **पवन सिंह फतिंगा** (मॉरिसस) ने आलेख-वाचन किया.

मुख्य अतिथि **डॉ. नीलकंठ तिवारी** ने पंडित जी की पुस्तक **'गांधी का करुण रस'** के हवाले से गांधी के अंतिम दिनों के संताप को याद किया. उन्होंने गांधी-दर्शन को आज के संदर्भ में सर्वाधिक प्रासंगिक

जीवन-दर्शन के रूप में रेखांकित करते हुए उनके सामाजिक-सरोकारों से जुड़ाव को जरूरी बताया.

विशिष्ट अतिथि **डॉ. उदय प्रताप सिंह**, अध्यक्ष हिन्दुतान एकेडेमी प्रयागराज ने विद्यानिवास जी से जुड़े अपने संस्मरण सुनाते हुए उन्हें विभिन्न सन्दर्भों में उनके बड़प्पन को याद किया. उन्होंने उनकी कर्मभूमि प्रयाग और जन्मभूमि गोरखपुर में उनकी स्मृति में आयोजन के लिए अपना संकल्प भी प्रकट किया.

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में **प्रो. रजनीश शुक्ल** ने कहा कि गांधी जी ने मालवीय जी के विषय मे लिखा था मैं तो उनका पुजारी हूँ, मैं उन पर कुछ लिख नही सकता हूँ, मैं सिर्फ उनकी स्मृति का बखान ही कर सकता हूँ. आज गांधी जी पर कुछ बोलने से पहले उस काल-खण्ड को भी समझना होगा. उन्होंने पंडित जी को युग पुरुष बताया और कहा कि पंडित जी ने अपने काल-खण्ड में विराट साहित्य का सृजन किया, उन्होंने उस समय जो लोग भी उनके सम्पर्क में ज्ञान लेने के उद्देश्य से आये उन्हें पूरे मनोभाव व श्रद्धा से वो सब कुछ दिया जो वो चाहते थे. हम सब की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि उन्होंने हम लोगो को जो दिव्य दृष्टि दी है उसका प्रचार प्रसार करें. तभी हमें अपने पितृ ऋण व गुरु ऋण से मुक्ति मिलेगी, यह तभी संभव होगा जब हम उनके दिए हुए ज्ञान का विस्तार करें, साथ ही हमारे शिक्षण-संस्थानों की भी यह नैतिक ज़िमेदारी बनती है वे अपने संस्थानों में विद्या निवास जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर कार्यक्रम व गोष्ठियों के माध्यम से उनके विचारों व साहित्य को पूरे देश विदेशों में प्रचारित और प्रसारित करें। गोष्ठी के अंत मे पूर्व कुलपति वर्धा **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने आये हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया. इस अवसर पर मुख्य रूप से **डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. सुनील, डॉ. विश्वनाथ, प्रो. शैलेश कुमार मिश्र, प्रो. राजनाथ, डॉ. बलभद्र, श्री आलोक चौबे, डॉ. ध्रुव नारायण पाण्डेय, डॉ. कौशलेंद्र सिंह, डॉ. अश्विनी झा. श्री राजेश भारती, श्री अरविंद चौधरी, श्री सन्तोष कुमार, श्री ऐश्वर्या चौबे, डॉ. ऋचा रानी, डॉ. सुमन नीलम, डॉ.**

तनुजा सिंह समेत **श्रीलंका, बल्गारिया, ट्रिनीनाड, मारिसश, गयाना, क्रोएशिया, लीथूनिया** एवं **पूर्वोत्तर भारत** से आये दर्जनों प्रतिभागियो की उपस्थिति रही. गोष्ठी का संचालन **डॉ. प्रकाश उदय** ने किया।

संस्कृत कवि गोष्ठी, रामरूचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान एवं पं. क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय स्मृति व्याख्यान
14 फरवरी 2020

विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास एवं बौद्ध दर्शन विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 फरवरी 2020 को स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत कवि-गोष्ठी, संस्कृत कवि-सम्मान एवं 'श्रीमद्भागवत की कथावस्तु का तात्त्विक विन्यास' विषय पर स्मृति व्याख्यान का आयोजन योग-साधना केन्द्र, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो. राजाराम शुक्ल, कुलपति, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. हेरराम त्रिपाठी, पूर्व आचार्य, संस्कृत, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रो. विजय शंकर शुक्ल, निदेशक, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी एवं प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, संकाय प्रमुख, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा माँ सरस्वती एवं पं. विद्यानिवास मिश्र जी के चित्र पर माल्यार्पण, दीप-प्रज्ज्वलन, श्री जयन्तपति त्रिपाठी के वैदिक मंगलाचरण एवं बौद्ध छात्रों एवं छात्रा रिंकू द्वारा पालि, प्राकृत एवं बौद्ध मंगलाचरण के साथ हुआ। छात्रों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया एवं प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी ने स्वागत भाषण किया। सचिव विद्याश्री न्यास ने अंगवस्त्र एवं माल्यार्पण से मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं अध्यक्ष का स्वागत-सम्मान किया।

इस अवसर पर चतुर्थ 'रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि-सम्मान' प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र को नारिकेल, अंगवस्त्र, प्रशस्तिपत्र, पुस्तक, प्रतीक चिह्न एवं सम्मान-राशि सहित समारोहपूर्वक मंचस्थ अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया।

इसी क्रम में पं. विद्यानिवास मिश्र द्वारा स्थापित श्रद्धानिधि न्यास की व्याख्यानमाला के अन्तर्गत अठारहवाँ व्याख्यान पं. क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय की

स्मृति में पं. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र द्वारा 'श्रीमद्भागवत की कथावस्तु का तात्त्विक विन्यास' विषय पर प्रस्तुत किया गया। प्रो. मिश्र ने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा मात्र न होकर भगवान का साक्षात् विग्रह है। वह सृष्टि-निर्माण एवं विकास की भारतीय चक्रीय अवधारणा का उत्कृष्ट उदाहरण है। श्रीमद्भागवत का कथ्य न सिर्फ उसकी कथावस्तु वरन् उसकी बनावट और बुनावट में भी सन्निहित है। प्रो. मिश्र ने अपने व्याख्यान में अनेक संदर्भों और विन्यास-संबंधी अनेक विशेषताओं के विश्लेषण के माध्यम से श्रीमद्भागवत के विभिन्न आशयों, निहितार्थों एवं उसके रस-माधुर्य तक पहुँचने-पहुँचाने की विविध प्रविधियों का उल्लेख एवं उपयोग किया।

आयोजन के तीसरे चरण में एक दर्जन युवा कवियों के अतिक्ति सर्वश्री पवन कुमार शास्त्री, कमला पाण्डेय, धर्मदत्त चतुर्वेदी, हरिप्रसाद अधिकारी, विजय कुमार पाण्डेय, आशीष त्रिपाठी, शिवराम शर्मा, कमलाकान्त त्रिपाठी, उमारानी त्रिपाठी, सुदर्शन अधिकारी, सदाशिव कुमार द्विवेदी, रेवा प्रसाद द्विवेदी आदि कवियों ने काव्य-पाठ किया। कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से पारंपरिक भावों के साथ ही समकालीन सामाजिक सरोकारों को भी अभिव्यक्त किया। कविताओं के सस्वर पाठ ने जहाँ संस्कृत के भाषा-माधुर्य से वहीं अपने वस्तुगत वैविध्य से भी सम्मोहित और प्रभावित किया।

इसी क्रम में प्रो. कमलाकान्त त्रिपाठी 'मतस्य लाभस्तू जनानुरंजनैः', प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी 'काव्यकर्म रसास्वादनिम नाः कवयोमुदा', प्रो. उमारानी त्रिपाठी 'करोमि राष्ट्र वन्दनम्', प्रो. विजय कुमार पाण्डेय 'जयति काशी भूतलम्', प्रो धर्मदत्त चतुर्वेदी 'दक्षिणात्मा प्रियंका सुवैधाप्यहो', डॉ. पवन कुमार शास्त्री 'हिमाद्रेः तुंगमृंगतः प्रबुद्धशुद्ध भारती', डॉ. चन्द्रकान्ता राय 'सदगुरोरास्मवाणी मतो निःस्मृता' एवं सदाशिव कुमार द्विवेदी 'विधायाः विलसतु' ने भी काव्य पाठ किया। अन्त में प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने पंडित जी की स्मृति की चर्चा करते हुये काव्यपाठ किया।

डॉ. हरिप्रसाद अधिकारी के निर्देशन में उनके एक दर्जन शिष्यों ने संस्कृत की महत्ता पर सामूहिक गान प्रस्तुत किया, जो विशेष आकर्षणका केन्द्र रहा।

विशिष्ट अतिथि प्रो. विजय शंकर शुक्ल ने विद्याश्री न्यास के साम्वत्सर आयोजन की शृंखला की एक कड़ी के रूप में पिछले 15 वर्षों से नियमित रूप से संपन्न होने वाली इस संस्कृत कविगोष्ठी को वाराणसी की पांडित्य-परंपरा की

एक पहचान के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से पण्डित जी के जुड़ाव की चर्चा करते हुए कलातत्त्व कोश के निर्माणमें उनके योगदान का भी स्मरण किया।

मुख्य अतिथि डॉ. राजाराम शुक्ल ने संस्कृत और संस्कृति के प्रति पण्डित जी की निष्ठा और सक्रियता को याद करते हुए उन्हें संस्कृति पुरुष की संज्ञा दी और ऐसे आयोजन और इसकी निरन्तरता के लिए विद्याश्री न्यास की सराहना की।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संपूर्ण आयोजन के समाहार के साथ ही प्रस्तुत स्मृति व्याख्यान एवं काव्य-पाठ के विविध पक्षों का उल्लेख करते हुए प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भावर्पूण स्मरण किया। उन्होंने बताया कि कैसे पंडित जी ने भारतीयता, भारतीय संस्कृति और भारत-भाव के सम्बन्ध में तमाम तरह के भ्रमों का निराकरण करते हुए उनके वास्तविक स्वरूप को प्रत्यक्ष किया।

इस साम्वत्सर आयोजन के संचालन के दायित्व का डॉ. गायत्री प्रसाद पाण्डेय ने कुशल निर्वाह किया तथा न्यास की तरफ से धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. दयानिधि मिश्र, सचिव, विद्याश्री न्यास ने किया।

प्रो. राममूर्ति चतुर्वेदी, प्रो, जितेन्द्र कुमार, प्रो. रमेश कुमार, श्री वाचस्पति त्रिपाठी, श्री गोविन्द त्रिपाठी, डॉ. उदयन मिश्र, श्री अशोक शुक्ल, श्री दिलीप पाण्डेय, श्री अनुराग शुक्ल, श्री शशिशेखर मिश्र, श्री सत्येन्द्र, श्री सुरेन्द्र कुमार आदि सुधीजन की उपस्थिति ने इस आयोजन की गरिमा की श्रीवृद्धि की।

भवदीय

(डॉ. दयानिधि मिश्र) सचिव, 'विद्याश्री न्यास'
मो. 09415776312, 9453002924, 8318858287
Vidyashrinyas2006@gmail.com
dayanidhimisra@gmail.com